आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 18/06/2026; Accepted: 20/6/2026; Published: 28/06/2026

"इक्कीसवीं सदी हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जनसुनवाई और महिला की स्थिति गति"

[1]डॉ. सी. एन होंबाली

अध्यापिका हिंदी और हिंदी विभाग अध्यक्षा

[2]श्रीमती. मंजुला. एन होंबाली

सहायक प्राध्यापिका हिंदी विभागाध्यक्षा पंचाक्षरी गवाईगल कला महाविद्यालय, गदग

[1]डॉ. सी. एन होंबाली, [2]श्रीमती. मंजुला. एन होंबाली, "इक्कीसवीं सदी हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जनसुनवाई और महिला की स्थिति गति", आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(277 -283)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21443704

अनुरूपी लेखक: **[1]डॉ. सी. एन होंबाली,** अध्यापिका हिंदी और हिंदी विभाग अध्यक्षा

सह लेखक: **[2]श्रीमती. मंजुला. एन होंबाली,** सहायक प्राध्यापिका हिंदी विभागाध्यक्षा पंचाक्षरी गवाईगल कला महाविद्यालय, गदग

आदिवासी जीवन पर केंद्रित उपन्यासकारों ने तटस्थ रूप से विश्वास के साथ अपने उपन्यास में पात्रों के द्वारा मानवीय संवेदनाओं को उजागर करके समस्या का हाल ढूंडने का प्रयास किया है। यह सब पहाड़ों में रहते हुए एक अलग पहचान बनाते हैं। यह अपना जीवन बारह घंटे धरती के साथ वहां के जल ,जमीन, वायु के साथ संबंध बनाए हैं।परंतु कुछ स्वार्थी राजनेता, सरकारी अधिकारी, पुलिस, जमींदार, जहांगीरदार यह सभी उनके साथ शोषण करके महिलाओं को शारीरिक मानसिक शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। आजादी के उपरांत से लेकर पिछले दो दशकों तक पर्यावरण-प्रदूषण ही लेखनी का विषय बन गया है। साथ

ही, हिंदी साहित्य के अंतर्गत आदिवासी जीवन पर मुख्य विमर्श होने लगा है। उनमें से संजीव, तेजिंदर, मैत्रेयी पुष्पा, वीरेंद्र जैन, रणेंद्र, राजेंद्र अवस्थी, योगेंद्रनाथ सिंह, विनोद कुमार, रमेश कुमार सिंह, सुरेश चंद्र श्रीवास्तव, हिमांशु जोशी, रमणिका गुप्ता आदि द्वारा रचित उपन्यासों में ज्यादातर आदिवासियों, खासकर महिलाओं की ज्वलंत समस्याओं का चित्रण किया गया है।

संजीव का उपन्यास 'सूत्रधार' इसमें पिछड़े, उपेक्षित, शोषित और मेहनतकश वर्ग एवं ग्रामीण-आंचलिक क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा को वाणी दी गई है। इसमें जाति-व्यवस्था की कटु और निर्मम आलोचना है। समकालीन समाज में छोटी जातियों का उच्च जातियों द्वारा सामाजिक शोषण किया जाता है। भिखारी ठाकुर नाई जाति के होने के कारण उन्हें हर जगह प्रताड़ित किया जाता है। उच्च वर्ग के लोग उन्हें 'भिखरिया', 'नचनिया', 'लौंडा' कहकर पुकारते हैं।

भिखारी ठाकुर नाच को कला का रूप देना चाहते हैं। वे उसे सम्मान दिलाना चाहते हैं। शुरू में उनके नाच की उपेक्षा की जाती है, लेकिन धीरे-धीरे 'विदेसिया' व्यापक क्षेत्र में लोकप्रिय बन जाता है। 'विदेसिया' भिखारी ठाकुर का प्रमुख नाच था। इसके अलावा 'बेटी-वियोग', 'पिया-वियोग', 'निसलन', 'गबर-घिचोर' आदि लोक-नाटकों के जरिए भिखारी ठाकुर ने समाज की तस्वीर पेश की, जिसने सबको झकझोर कर रख दिया। उनके नाच में कलाकारों का वैयक्तिक दर्द तथा सामाजिक बोध बार-बार प्रकट होता है। उनके नाटकों में कहीं भी स्थिरता नहीं दिखाई देती। उनमें हम निरंतर विकास और बदलाव देख सकते हैं।

ठाकुर ने 'लौंडों' के अश्लील नाच को सृजनात्मक, कलात्मक और साहित्यिक ऊँचाई प्रदान की। भिखारी ठाकुर के नाटकों में बेटी बेचने जैसी कुरीतियों की खिल्ली उड़ाई गई है, और ये सारी कुरीतियाँ अधिकांशतः उच्च जाति के लोगों में ही व्याप्त थीं। भिखारी ठाकुर लोक-जीवन में स्थित नारी की दशा को बड़ी ही मार्मिकता से नाच के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उनके नाच को देखकर नारियों की सिसकियाँ उभर आती हैं।

लड़कियाँ बूढ़े दूल्हे से शादी करने से इनकार करती हैं। ऐसे में पिता भी बेटी की शादी बूढ़े दूल्हे से न करने की कसम खाते हैं। वे निरंतर नाच को परिष्कृत करते हैं। उन पर नाच की मानो धुन सवार रहती है। अपनी पत्नी की मृत्यु पर भी उन्हें नाच रोकना स्वीकार नहीं। वे अपने साथी जुड़न से कहते हैं, "ना बाचा, ना। आँसू छलक आएँ, गला भर जाए तो छिपा लेना है। उहे तो असली पाट (अभिनय) है।" 1 इस प्रकार भिखारी ठाकुर को एक से बढ़कर एक सम्मान से सम्मानित किया जाता है, फिर भी अंत तक उन्हें उच्च जाति के लोगों से अपमान सुनना पड़ता है।

संजीव का उपन्यास 'धार' इसमें हम देखते हैं कि मंगल नामक युवक को बलात्कार न करने पर भी जेल में खूब मार-पीट कर कबूल करने के लिए मजबूर किया जाता है। जिन्होंने खुद बलात्कार किया था, वे बच जाते हैं और सारा आरोप मंगल पर डाल देते हैं। असली बलात्कारी जेलर बच जाता है। "ऐसा मार-मारकर जेलर कबूल करवाते हैं। मंगल नाम के युवक ने बलात्कार न करने पर भी जेल की औरत पर बलात्कार किया है , फिर भी कहा जाता है कि उसने जेल की औरत से बलात्कार किया है।"2

कृष्ण अग्निहोत्री का उपन्यास 'नीलोफर'*

इसमें भी दिखाया गया है कि पटवारी का बड़ा लड़का अपनी पत्नी को बर्तन लाने के बहाने कमरे में बुलाता है। जब वह कमरे में आती है तो उसके गोरे गाल मसल देता है और कहता है, "रुई का फाहा है री, इतनी नरमाई कहाँ से लाई है? क्यों उस मूरख के पास पड़ी है? मैं तुझे बहुत अच्छी जगह भेज दूँगा, मस्ती मारेगी वहाँ।"3 इस तरह के अत्याचार आदिवासी महिलाओं पर कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी रूप में हमेशा होते ही रहते हैं। इसका चित्रण यहाँ मिलता है।

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी'*

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जनसमुदाय और महिलाओं की स्थिति-गति के बारे में अनेक लेखकों ने कलम चलाई, उनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम सर्वोपरि है। इनके द्वारा लिखित 'अल्मा कबूतरी' कबूतरा जाति पर लिखा गया महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में दो समाजों का चित्रण किया गया है – एक कबूतरा जाति का समाज और दूसरा, जिसे कबूतरा जाति के लोग 'कज्जा' कहते हैं। कज्जा जाति के लोग सवर्ण हैं, इनके द्वारा आदिवासी नारियों का शोषण किया जाता है। शोषण करने वालों में मंसाराम, धीरज, सूरजभान, श्रीधर शास्त्री आदि हैं। इन लोगों की शिकार कदमबाई, भूरी माँ और अल्मा आदि बन जाती हैं।

कबूतरा जाति की खूबसूरत लड़की कदमबाई की शादी जंगलिया से होती है। जंगलिया उस प्रदेश में चोर और डाकू की हैसियत से प्रसिद्ध है। कबूतरा जाति के लोग मंसाराम की मेहरबानी से उन्हीं की जमीन पर रहते हैं। कदमबाई की दुबली-पतली, लचीली, नशीली देह ने मंसाराम को पागल बना दिया, परंतु कदमबाई उसकी बातों में आने वाली नहीं थी। ऊपर से शादीशुदा स्त्री, वह अपने पति से बेहद प्रेम करती थी। कदमबाई की पूरी गतिविधियों को जानकर मंसाराम धोखे से उसकी देह पाना चाहता है। जब यह मुमकिन नहीं होता तो मंसाराम अपने ही परिवार में से जंगलिया से चोरी करवाता है, उसे पुलिस की नजर में गुनहगार साबित करता है। पुलिस से बचने के लिए जंगलिया जंगल में गुम हो जाता है, परंतु मंसाराम उसे मरवा देता है। कदमबाई को अकेली पाकर वह उसे देह सहित हासिल कर लेता है। कदमबाई गर्भवती होती है और आगे चलकर एक बेटे को जन्म देती है, जिसका नाम राणा रखा जाता है। बचपन से ही वह अपनी माँ के लिए समस्या बनता है, क्योंकि कदमबाई हमेशा अपने बेटे राणा के ही बारे में सोचती है। वह अपने बेटे को स्कूल भेजना चाहती है, परंतु राणा को जिस स्कूल में भर्ती किया जाता है, वहाँ के सवर्ण बच्चे उसे बहुत तकलीफ देते हैं। उसके स्कूली बस्ते को पीपल के पेड़ पर टाँग देते हैं। उसे लेने के लिए जब वह पेड़ पर चढ़ता है तो दुष्ट मास्टर जी उसे ही मारते हैं।

कबूतरा जाति की पहली माँ थी भूरी। रामसिंह का इतिहास माँ भूरी से प्रारंभ होता है। उसने अपने बेटे के हाथ में कुल्हाड़ी-डंडा न देकर पोथी और पाटी दी। वह अपने बेटे का भविष्य उज्ज्वल देखना चाहती है। उसके लिए वह कज्जा लोगों को अपना देह बेचती है। वह बेटे को पढ़ाने में जी-जान से मेहनत करती है। रामसिंह पढ़कर अध्यापक बन जाता है। वह सभ्य बनकर जीवन जीना चाहता है, परंतु सभ्य कहलाने वाले

उच्च वर्ग के लोग उसे स्वीकारने में हिचकते हैं। पुलिस सिपाही कहता है, "रामसिंह, नौकरी तो मिली है, हमारा हक छीनने का हक नहीं। रोटी मिल गई तो तू न्याय माँगने के लिए लड़ने लगा। न्याय लेगा किससे? डंडा, रायफल, हथगोले जैसी ताकत तो हमारे पास है बेटा। तू क्या, सारे देश पर यही ताकत हुकूमत करती है।" 4

रामसिंह सवर्ण समाज के आगे हतप्रभ हो जाता है। पुलिस और डाकू में नकली मुठभेड़ होती है। पुलिस डाकू से पैसे लेकर उसकी जान बचाती है और उसकी जगह रामसिंह की हत्या करके उसकी लाश को डाकू की लाश घोषित कर देती है।

कदमबाई के अलावा अल्मा का पात्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। अल्मा रामसिंह की पुत्री है। कदमबाई अपनी ही जाति के पढ़े-लिखे रामसिंह के पास राणा को पढ़ाई के लिए रख देती है। राणा को लेकर कदमबाई बड़े-बड़े सपने देखती है। कदमबाई की दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते सपना आकार बदलने लगता है। "कदमबाई रामसिंह के साए में बेटे की तस्वीर देख रही है। तस्वीर किसी नदी किनारे की एकांत या सुनसान जंगल में पेड़ों के बीच रोने की नहीं, गाँव में जमीन-सत्ताओं से टकराने की है। वह छिपने का नहीं, लड़ने का सपना देखने लगी है।" 5

अल्मा यौवन की दहलीज पर जैसे-जैसे कदम रखती है, राणा के प्रेम में बँधकर उसी को जी-जान से चाहने लगती है। अपने मन में राणा के प्रति सच्चा प्रेम होने के कारण वह राणा के साथ शारीरिक संबंध भी बनाती है। परंतु राणा से शादी करने ही वाली थी कि उसके पिता रामसिंह की हत्या हो जाती है। पिता के देहांत के बाद उसे दुर्जन सिंह कबूतरा के घर पहुँचाया जाता है। दुर्जनसिंह धन का लोभी होता है, वह कुछ रुपयों में अल्मा को सूरजभान के हाथों बेच देता है। सूरजभान के घर में बंदी अल्मा उसकी काल-कोठरी से मुक्त होकर भाग निकलती है। भागते हुए वह विधानसभा के विधायक श्री राम शास्त्री के घर पहुँचती है। वहाँ उसकी रखैल बनकर अपना जीवन व्यतीत करती है। विधायक श्री राम शास्त्री अल्मा का उपभोग करना चाहता है। उच्च वर्गीय अत्याचारों ने अल्मा की जिंदगी का सुख, हँसना-रोना भी छीन लिया। अल्मा का यह रखैल का रूप भी ज्यादा दिन तक नहीं चलता। एक दिन मंदिर-जीर्णोद्धार के समय श्री राम शास्त्री की किसी अनजान व्यक्ति द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी जाती है। तब अल्मा विधवा बन जाती है। वह समाज के सारे विधि-विधानों के अनुसार श्री राम की पत्नी के रूप में क्रिया-कर्म करती है।

इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास की रचना करके आदिवासी नारी की त्रासदी और शोषण पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। आदिवासी समाज की कदमबाई, भूरी माँ और अल्मा का शोषण सवर्ण लोगों द्वारा होता है, फिर भी वे सभी जीवन जीने के लिए मजबूत बनती हैं। इसका चित्रण इस उपन्यास में हम देख सकते हैं।

वीरेंद्र जैन के उपन्यास 'डूब' इन उपन्यासों की प्रमुख पात्र गौराबाई है, जो लोहार जाति की स्त्री है। पूरे गाँव में उसे 'अक्का' कहा जाता है। गाँव में किसी के घर शादी हो या संतान-प्राप्ति, वह वहाँ हाजिर होती है।

अपने लड़के रामदुलारे से वह अथाह प्रेम करती है। उसकी शिक्षा-दीक्षा की भी पूरी व्यवस्था करती है और उसके सफल भविष्य की कामना करती है। बौरा गई है, सठिया गई है गौराबाई, जागते में सपने देखती है कि उसका रामदुलारे बड़ा हो गया है, लाटसाहब हो गया है। यहाँ तक कि लाटसाहब से उसे इतना स्नेह है कि उसके निधन की वार्ता सुनते ही वह अपने प्राण त्याग देती है। दोनों उपन्यासों में जमींदारी व्यवस्था, शासन-तंत्र, साहूकार, सरकार के प्रति घृणा व्यक्त की गई है और उन पर व्यंग्य कसा गया है। यहाँ स्त्री-संघर्ष, नारी-अस्तित्व की खोज, नारी-चेतना आदि पर जोर दिया गया है। गौराबाई के बहाने एक स्त्री की संघर्ष-गाथा को लेखक ने प्रस्तुत किया है।

रणेंद्र का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' इसमें झारखंड के आदिवासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें भारतीय मूल निवासियों की सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं को नष्ट होते दिखाया गया है। विकास के नाम पर आदिवासी समुदाय के आत्म-सम्मान, अस्तित्व तथा उसकी रक्षा के लिए सतत संघर्ष और जूझते रहने का हृदयद्रावक चित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' में आदिवासियों का निरंतर शोषण होता आ रहा है। समाज में शिष्ट दिखने वाले लोग आदिवासियों की बहन-बेटियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? आर्थिक कमी के कारण वे शिकार भी बनते हैं।

"गौनोवा रखनियों की जवान बेटियों का भी भरपूर इस्तेमाल करता है। किसकी थाने के बाबू से 'हटाना' है, किसको 'वीडियो' साहब के लिए 'बचाना' है और कौन विधायक जी के नाइट-हॉल्ट में 'गोड़ दबाएगी'? सबका हिसाब-किताब बुडवा रखता है।"6 चिंता उचित ही है। धनवान, जमींदार, जागीरदार सभी एक-न-एक तरह से भोली-भाली आदिवासी कन्याओं का शारीरिक-मानसिक शोषण करते रहते हैं। भारत में औद्योगीकरण और प्रगति के नाम पर आदिवासी संस्कृति का हनन हो रहा है। कभी पुरुष का, कभी स्त्रियों का, किसी-न-किसी रूप में शोषण तो हो ही रहा है।

राजेंद्र अवस्थी का उपन्यास 'जंगल के फूल' यह उपन्यास भी आदिवासियों की नारी-जीवन की स्थिति पर आधारित है। इसमें गोंड जाति के बारे में बताया गया है। यह 'जंगल के फूल' उपन्यास प्रतीकात्मक है। यहाँ आदिवासी लोग अपनी भूख मिटाने के लिए जंगल-जंगल भटकते रहते हैं।

इन आदिवासी स्त्रियों को निम्न कोटि में रखा गया है। नारी वास्तव में रीति-रिवाज, नियम एवं प्रथाओं से अनभिज्ञ नहीं है। उपन्यास में जालिया घोटुल की सरदार झालर से कहती है, "तुम हाथ में डुगडुगी लेकर बंदर की तरह औरतों को नचाते हो और जब औरत अपना ढोल पीटना चाहती है तो तुम ढोल की रस्सी ढीली कर देते हो और कहते हो भगवान ने लिखा है कि तुम ढोल नहीं पीट सकतीं।"7

रमेश कुमार सिंह का उपन्यास 'पठार पर कोहरा' इस उपन्यास में स्त्री-संघर्ष, स्त्री-अस्मिता की पहचान, नारी-जागरण आदि पर जोर दिया गया है। इस उपन्यास में रंगेनी छोटी उम्र में ही विधवा बन जाती है और वह अनेक पुरुषों द्वारा शोषित भी होती है। आखिर में उसका बलात्कार भी किया जाता है।

जब वह गर्भवती होती है तो पंचायत उसे दूसरा विवाह करने को कहती है, पर वह कहती है, "मर्द के नाम से घिन आती है हमें – अब हमें किसी मर्द पर भरोसा नहीं।" 8

योगेंद्रनाथ सिंह का उपन्यास 'वन के मन में' यह उपन्यास 'हो' जनजाति को लेकर लिखा गया है। इस जाति में स्त्री तथा पुरुष बराबर हैं। इस जाति में स्त्री भी पुरुष के साथ मिलकर कठोर मेहनत करती है और उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है।

सुरेश चंद्र श्रीवास्तव का उपन्यास 'वनतरी' इस उपन्यास में आदिवासी जाति की नारी-चेतना को हम देख सकते हैं। उपन्यास में वनतरी, परहिया जाति की है। वह ब्राह्मण जाति के युवक से मिलकर उसी के साथ मिथिल में रहने लगती है। तब वह मुखिया से कहती है, "परहिया की जाति, तुम्हारी विपौती जाति नहीं है। तू महतो है, आदिवासी को नीचा समझता है। तुम्हें मेरी बिरादरी की इतनी ही चिंता है तो पहले अपना घर देखो।"9 इन वाक्यों में वनतरी की स्त्री-चेतना देख सकते हैं। उसके साथ-साथ अपनी जाति के प्रति उसकी निष्ठा एवं उच्च संकल्प को भी हम देख सकते हैं।

हिमांशु जोशी का उपन्यास 'समय साक्षी है' इस उपन्यास में आदिवासियों की समकालीन स्थिति का अत्यंत मार्मिक वर्णन हम देख सकते हैं। "यह आदिवासी क्षेत्र वैसा का वैसा ही रहा, जैसा आदिकाल में कभी रहा होगा। देश के विभाजन के समय बहुत से विस्थापित परिवारों को जमीन देकर यहाँ बसाया गया था और यह सिलसिला किसी-न-किसी रूप में अब तक बना हुआ था, पर ये लोग आदिवासियों पर आए दिन तरह-तरह के जुल्म किया करते थे। अच्छी गाय-भैंस देखी, उसे खोलकर ले गए। उपजाऊ खेतों पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया, पटवारी-पुलिस की जेब गर्म कर दी। जवान बहू-बेटियों को दिन-दोपहर उठाकर ले जाते, जब जिसे चाहे लूटकर उजाड़ देते। विस्थापितों को बसाने के इस अभियान में बेचारे आदिवासी ही विस्थापित हुए जा रहे थे। अच्छी-अच्छी जमीनें छिन गई थीं, यहाँ तक कि खड़ी फसलें लुट गई थीं। धीरे-धीरे उन्हें बीहड़ वनों की ओर धकेला जा रहा था।" 10

प्रभा खेतान का उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' प्रभा खेतान ने मारवाड़ी समाज में स्त्रियों की स्थिति को देखा और लिखा है। पितृ-सत्तात्मक समाज-व्यवस्था में प्रभा खेतान ने स्त्री-जीवन के यथार्थ को बहुत ही गहराई से देखा, परखा और अनुभव किया था। स्त्री होने के नाते उन्होंने इस व्यवस्था में जी रही स्त्री के दुख, दर्द, उसकी पीड़ा, समस्याएँ, उसके मनोदशा को अनुभव किया। उन्होंने सदियों से दमित, शोषित, पराधीन स्त्री की स्वायत्तता, समता और स्वतंत्रता के अधिकार की बात को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी-विद्रोह खुलकर आया है।

निष्कर्ष स्वरूप में हम कह सकते हैं क्या आदिवासी साहित्य या जंगलों में जीने वाली ठंड वर्षा और धूप की परवाह न करने वाले वंचित और का साहित्य है इसमें वेदना और विद्रोह है हजारों वर्षों से पीड़ित शोषित होना का चित्रण है शिक्षा कुछ योजनाएं उनके पास थोड़े अधिक रूप से पहुंची पर उनमें इसका जीवन सुखमय नहीं हो पता पाया यह सब स्थितियां आदिवासी कथा साहित्य में दिखाई देते हैं इन कथा

साहित्य का परिवेश भी सीमित होते हुए भी उपदेश मात्र व्यापक है कुल मिलाकर हम यह कह सकते की कथा साहित्य में आदिवासियों की बेबी जिंदगी का एक एल्बम है। अत: कह सकते है की उपर्युक्त आदिवासी उपन्यासों में आदिवासियों के दुर्बल आर्थिक स्थिति , अंध श्रद्धा, अंधविश्वास, शोषण, पीड़ा, मजबूरी अन्याय अत्याचार आदि पहलुओं का अत्यंत बारीकी के साथ चित्रण किया है। अंत में हम कह सकते कि चाहे कदमबाई हो, अल्मा हो,बतनी हो,भूरी मां हो,जलिया हो,वनतरी हो ये सभी आदिवासी नारियां कहीं ना कहीं किसी न किसी को सवर्ण जाती के लोगों से , अधिकारी , राजनेता , पुलिस के हाथों प्रताड़ित शोषण हुई नारियां है। बस इन सबको शिक्षा देना चाहिए गौरव के रूप में इज्जत के साथ देखने की मन:स्थिति होना चाहिए। तभी तो कुछ ना कुछ बन पाता है वरना यह अन्याय अत्याचार मानसिक
दैहिक शोषण होता ही रहेगा। लेखक सोच इन सभी के मूक वाणी को आवाज देने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. क्रम सं किताब का नाम लेखक का नाम पृष्ठ सं
   सूत्रधार - संजीव - 153
2. आदिवासी साहित्य - सं डॉ रमेश कुरे-152
3. विविध आयाम डॉक्टर मालती शिंदे,
4. नीलोफर - कृष्णा अग्निहोत्री -140
5. अल्मा कबूतरी - मैत्रेई पुष्पा -104
6. अल्मा कबूतरी। - मैत्रेई पुष्पा -225
7. ग्लोबल गांव के देवता – रणेद्र -36
8. जंगल के फूल - राजेंद्र अवस्थी -182
9. पठार पर कोहरा - रमेश कुमार सिंह-70
10. वनतरी - सुरेश चंद्र श्रीवास्तव -91
11. आदिवासी विकास के - सं रमणिका -55
    a. विस्थापन। गुप्ता

****